International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.1 Sept – Oct 2022

भारतीय फिल्म उद्योग – एक ऐतिहासिक अवलोकन

डॉ. राजेश मौर्य[१] **प्रो. जे. पी. मित्तल**[२]
[१]सहा. प्रा. अर्थशास्त्र शास. नेहरू महा. वि. सबलगढ़ जिला-मुरैना
[२]प्राचार्य शास. नेहरू. महा. वि. सबलगढ जिला-मुरैना
Corresponding Author- **डॉ. राजेश मौर्य**
Email id: dr.rajeshmourya@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7266754

सारः-
भारत में फिल्म या सिनेमा लोगों के लिये मनोरंजन के साथ-साथ उनके जीवन का एक अभिन्न अंग रहा हैं, क्योंकि सिनेमा ने प्राचीन भारतीय संस्कृति, सभ्यता और सामाजिक जीवन से समय-समय पर परिचित कराया हैं। भारतीय फिल्म उद्योग, जो कि भारत की वाणिज्य कहे जाने वाले शहर मुम्बई में स्थित हैं, बॉलीवुड के नाम से जाने जाती हैं। यह नाम दो शब्दों बॉली+हॉलीबुड, से मिलकर बना हैं। यहॉ बॉली का मतलब बॉम्बे (मुम्बई से पूर्व कहा जाने वाला नाम) और हॉलीवुड विदेशों में बनने वाली फिल्मों के लिये एक चर्चित नाम हैं, इसीलिये इसे बॉलीवुड कहा जाता हैं परन्तु भारत में केवल हिन्दी भाषा की ही फिल्में नहीं बनती बल्कि कई अन्य राज्यीय या क्षेत्रीय भाषाओं में भी बहुत बड़े पैमाने पर फिल्मों का निर्माण किया जाता हैं। जिन्हें अलग-अलग नामों जैसे तमिल (कॉलीवुड), तेलगू (टॉलीवुड), हिन्दी (बॉलीवुड) आदि से संबोधित किया जाता हैं। इनमें से सबसे अधिक फिल्मों का निर्माण कॉलीवुड में होता हैं, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर सफलता तथा बिक्री के मामलें में हिन्दी भाषा की फिल्में अग्रणी हैं, जिन्हें न केवल भारतीय दर्शक पसंद करते हैं बल्कि विदेशों में निवासरत प्रवासी भी पसंद करते हैं।

भारतीय फिल्म उद्योग का इतिहास कठिन परिश्रम, संघर्ष व चुनौतियों से भरा हुआ हैं। इसके इतिहास की शुरूआत तब हुयी जब **फ्रॉस के दो भाई, जिन्हें लुमियर ब्रदर्स के नाम से जाना जाता हैं, ने मुम्बई के वाटसन होटल में ६ लघु फिल्मों का प्रदर्शन किया था।**[७] उनके इस प्रदर्शन से प्रेरित होकर **हरिश चन्द्र सखाराम भाखडेकर ने इंग्लैण्ड से एक कैमरा मॅगवाया था।**[८] भाखडेकर ने कैमरे के माध्यम से बुम्बई के हैंगिग गार्डन में एक छोटी सी क्लिपिंग के रूप में कुश्ती मैच की रिकॉर्डिंग की थी। इस क्लिंपिंग को भारतीय फिल्म उद्योग की पहली चलचित्र कहा जाता हैं। इसके बाद भारतीय फिल्म उद्योग में एक क्रॉति उत्पन्न हुयी और अनेक निर्माता-निर्देशकों ने कई फिल्मों का निर्माण किया था।

वर्ष १९१३ में दादा साहेब फाल्के, जिन्हें भारतीय फिल्म उद्योग का जन्मदाता कहा जाता हैं, ने **राजा हरिशचन्द्र नाम की एक फिल्म का निर्माण किया और फिल्म उद्योग को एक मजबूत नींव प्रदान की थी।**[६] यह एक ऐसी फिल्म थी, जिसमें आवाज का कोई प्रबंध नहीं था अर्थात मूक फिल्म के रूप में जानी गयी थी, लेकिन पहली बोलती फिल्म का दर्जा **वर्ष १९३१ में अर्देशिर इरानी द्वारा निर्देशित आलम-आरा को प्राप्त हुआ था।**[१०] यह एक ऐसा वर्ष था, जिसमें न केवल हिन्दी भाषा की बल्कि अन्य राज्यीय या क्षेत्रीय भाषाओं में भी फिल्मों का निर्माण आरंभ हो चुका था।

वर्ष १९४० से १९५० के दशक में भारतीय फिल्मों के संदर्भ में अशॉती का वर्ष साबित हुआ था, क्योंकि इस अवधि में द्वितीय विश्व युद्ध तथा भारत-पाक विभाजन जैसी घटनायें उत्पन्न हुयी थी,

लेकिन फिर भी भारतीय फिल्म उद्योग में परिवर्तन और उल्लेखनीय प्रगति का स्तर भी देखा गया था, जबकि १९६० तथा १९७० की अवधि में पारिवारिक कहानियों के स्थान पर विवादस्पदा फिल्मों का निर्माण शुरू हो गया था, जिसमें कमाल अवरोही, राजकपूर व जे.पी. शिप्पी जैसे निर्माता, निर्देशको ने क्रमशः पाकीजा, बॉबी व शोले जैसी सुपर-डूपर फिल्मों का निर्माण किया था और राजेश खन्ना, धर्मेन्द्र, मुमताज जैसे सितारे उभरकर आये थे।

१९८०-१९९० का दशक भारतीय फिल्मों में सदाबहार व मधुर संगीत के नाम से जाना जाता हैं, जिसमें कयामत से कयामत तक से लेकर चॉदनी, मैने प्यार किया, दिलवाले दुल्हनियॉ ले जायेंगे आदि संगीत आधारित फिल्मों का निर्माण हुआ था जबकि ९० के दशक में शाहरूख खान, सलमान खान, श्री देवी, जूही चावला व माधुरी दीक्षित जैसे कलाकार उभरकर आये और मसाला युक्त (कॉमेडी, ड्रामा, हॉरर) फिल्में दृष्टि पटलपर दृष्टिगोचर हुयी थी।

आज अर्थात २०वीं शताब्दी में भारतीय फिल्मों के निर्माण में कम्प्यूटर व तकनीकी यंत्रों का प्रयोग के द्वारा बेस्ट से बेस्ट फिल्में निर्मित की जा रही हैं तथा वैश्विक स्तर की फिल्मों से प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम हुयी हैं। यही कारण हैं कि आज वैश्विक स्तर पर भारतीय फिल्मों को पसंद किया जा रहा हैं।

फोकस क्षेत्र या मुख्य बिन्दूः- भारतीय फिल्म उद्योग, बॉलीवुड, फिल्मों की आरंभिक स्थिति, १९३१ से लेकर २०वीं शताब्दी तक की स्थिति।

प्रस्तावनाः- यदि आप किसी भी व्यक्ति से पूछते हैं कि मनोरंजन के लिये आप निम्नलिखित में से जैसेः- खेल, नाटक (रंगमंच), लोगों से बाते करना, फिल्म आदि में से सबसे अधिक किसे पसंद करते हैं, तो वह निश्चित रूप से कहेगा कि फिल्म, हालॉकि वर्तमान में अधिकॉश लोगों के लिये खेल, विशेष रूप से क्रिकेट मैंच लोगों के संदर्भ में सिर चढ़कर बोल रहा हैं अर्थात यह खेल लोगों के लिये ऐसा नशा बन गया हैं कि वह उठते-बैठते, सोते-जागते इसी की बातें करते हैं, परन्तु इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता हैं कि फिल्में भी भारतीय लोगों के लिये मनोरंजन के क्षेत्र में एक प्रमुख हिस्सा रही हैं। आज प्रत्येक भारतीय के लिये फिल्में उसके जीवन का एक मुख्य हिस्सा बन गयी हैं।

फिल्म या सिनेमा मूल रूप से समय, ध्वनि, स्थान तथा कहानी के आधार पर चलचित्र या छवियों का एक समूह होता हैं। जिसे कैमरा के माध्यम से इतनी तीव्र गति से संचालित किया जाता हैं, जिससे व्यक्ति को पर्दे पर चित्र या छवियॉ चलती हुयी दिखायी देती हैं। आज भारतीयों के लिये यह मनोरंजन के रूप में जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन गया हैं और दक्षिण एशिया तथा मध्य पूर्व में भाषाई व सॉस्कृतिक विशेषताओं के कारण बहुत बड़े पैमाने पर लोगों द्वारा देखा जाता हैं।

भारतीय फिल्म उद्योग में केवल हिन्दी भाषा की फिल्में ही नहीं बनायी जाती बल्कि अन्य राज्यीय या क्षेत्रीय भाषाओं जैसेः- भोजपुरी, मलयालम, तमिल, तेलगू, कन्नड़, बंगाली, असमिया व पॅजाबी इत्यादि भाषाओं में भी बहुत बड़े पैमाने पर बनायी जाती हैं। फिल्म निर्माता की दृष्टि से भारत के संदर्भ में यह कहा जाता हैं कि **भारत में उक्त सभी भाषाओं की दृष्टि से प्रतिवर्ष १००० फिचर फिल्मों का निर्माण किया जाता हैं,**[1] जो कि विदेशी (हॉलीवुड) द्वारा निर्माण की जा रही, फिल्मों की संख्या से भी काफी अधिक हैं। यही कारण हैं कि २०वीं सदी में भारतीय फिल्म उद्योग वैश्विक स्तर पर तीव्र गति से उभरकर आया हैं। आज यह गतिशील तथा तीव्र गति से संचालित मीडिया के माध्यम से विश्व के ९० देशों से भी अधिक देशों में भारत अपनी फिल्मों का प्रदर्शन कर रहा हैं और कई अन्य फिल्मी विदेशी निवेशक जैसेः- वार्नर ब्रदर्स, सोनी पिक्चर्स, स्टार प्लस, जी टीबी, एड लैब्स आदि भारत में निवेश करके व्यापक पैमाने पर अपने फिल्म स्टुडियों स्थापित किये हैं।

भारतीय फिल्म उद्योगः- भारत में जितने भी हिन्दी भाषा फिल्मों के प्रेमी हैं या प्रशंसक हैं, उन्हें यह अवश्य ज्ञात होगा कि बॉलीवुड क्या हैं? और यह हमारी फिल्मों से किस प्रकार संबंधित हैं और क्यों?

बॉलीवुड विदेश में स्थित हॉलीवुड से प्रेरित होकर लिया गया हैं यह (हॉलीवुड) विदेश में फिल्मों के लिये एक चर्चित स्थान के रूप में जाना जाता हैं, जहॉ व्यापक स्तर पर फिल्मों का निर्माण किया जाता हैं। इसी से प्रेरित होकर भारतीय फिल्म निर्माण उद्योग को बॉलीवुड नाम दिया गया हैं, परन्तु यहॉ पर बॉलीवुड को एक अलग प्रकार से परिभाषित करके प्रस्तुत किया गया हैं। **एक वेबसाईट** (ूण्अवबंइनसंतलण्बवउ) के अनुसार – ''बॉलीवुड शब्द दो शब्दों का मिश्रण हैं, पहला बॉम्बे तथा हॉलीवुड, बॉम्बे, जिसें आज मुम्बई कहा जाता हैं, पूर्व में बॉम्बे नाम था। जहॉ हिन्दी भाषा का भारतीय फिल्म उद्योग संचालित था जबकि हॉलीवुड, एक विदेशी फिल्म निर्माण चर्चित स्थान हैं और इसी प्रसिद्धी के कारण इस शब्द को लिया गया हैं, इसीलिये बॉलीवुड नाम रखा गया हैं।''[२] दूसरे शब्दों में यह भारत की हॉलीवुड हैं। भारत की फिल्में सम्पूर्ण दुनियॉ में एक बेहत्तर संगीत, नृत्य तथा शानदार वेश-भूषा के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन फिल्मों की लम्बाई समय के आधार पर ३ या ३.३० घण्टे की होती हैं, जबकि विदेशी फिल्में १.३० या २ घण्टे तक की हो सकती हैं।

भारतीय फिल्म उद्योग में जिन फिल्मों का निर्माण किया जाता हैं, वह कई लोग तथा विभागों के सहयोग से होता हैं। **विकीपीड़िया के अनुसार** – ''भारतीय फिल्म निर्माण में तकनीकी वाणिज्यिक संस्थान से लेकर फिल्म स्टुडियो, छायॉकन, पटकथा, लेखन, पूर्व उत्पादन, पोस्ट प्रोडक्शन, फिल्म समारोह, अभिनेता तथा अभिनेत्रियॉ आदि शामिल होती हैं।''[३]

भारतीय फिल्म उद्योग न केवल हिन्दी भाषा की फिल्मों के लिये प्रसिद्ध हैं बल्कि कई अन्य राज्यीय व क्षेत्रीय भाषाओं के लिये भी प्रसिद्ध हैं। जिन्हें भाषा या क्षेत्र के आधार पर भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता हैं।

तलिका भारतीय फिल्म उद्योग (भाषा के आधार पर फिल्मों का निर्माण)

स्थान	भाषा	नाम	कुल फिल्मों का निर्माण (प्रतिवर्ष)
प्रथम	तमिल	कॉलीवुड	२६० से अधिक
द्वितीय	तेलगू	टॉलीवुड	२५० से अधिक
तृतीय	हिन्दी	बॉलीवुड	२२० से अधिक
स्त्रोतः–Indian's Movie Industry:- Bollywood and Types of Movies in India. (www.musicgateway.com)			

उपरोक्त तालिका के आधार पर यह कहा जा सकता हैं कि भारत में सर्वाधिक संख्या में फिल्मों का निर्माण दक्षिण भारत में स्थित राज्य तमिलनाडू में किया जाता हैं, जो कि तमिल भाषा में होती हैं जबकि दूसरे स्थान पर आन्ध्रप्रदेश राज्य हैं, जहॉ तेलगू भाषा में फिल्मों का निर्माण होता हैं और लोगों द्वारा सबसे अधिक देखे जाने वाली फिल्में, जिन्हें बॉलीवुड कहा जाता हैं, फिल्म निर्माण में तीसरे स्थान पर दर्ज हैं। इससे यह स्पष्ट होता हैं कि दक्षिण भारत में सबसे अधिक फिल्मों का निर्माण होता हैं, चाहे वह कम लोगों द्वारा ही देखा जायें, जबकि हम सब लोग यह बात अच्छी तरह से जानते हैं कि भारत में सबसे अधिक हिन्दी भाषा की फिल्में पसंद की जाती हैं, इसीलिये इन फिल्मों में काम मिलना किसी भी व्यक्ति या युवा के लिये आसान नहीं होता हैं। काफी संघर्ष, कठिन परिश्रम और बेहत्तर अभिनय के परिणामस्वरूप ही उन्हें काम मिलता हैं। जिसका उत्तम उदाहरण अमिताभ बच्चन हैं, जो आज भी अपने उत्तम अभिनय के कारण बॉलीवुड में अपना स्थान बनाये हुये हैं।

भारत में जितनी भी फिल्में बनती हैं, उसमें से हिन्दी भाषा की फिल्मों को लोगों द्वारा सर्वोच्च वरियता दी जाती हैं। यही कारण हैं कि वैश्विक बॉक्स ऑफिस की उपस्थिति तथा बिक्री की दृष्टि से

यह अब्बल रहती हैं। **रामनाथन शारदा के अनुसार** – "वर्ष २००० में भारतीय फिल्मों में दिया जाने वाला संगीत के कारण फिल्म द्वारा उत्पन्न शुद्ध राजस्व में ४ से ५: का हिस्सा रहा हैं।[४] जिसका प्रमुख कारण विदेशों जैसे – अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, कनाड़ा इत्यादि में रहने वाले भारतीयों की वजह रही हैं। अप्रवासी भारतीय मूल रूप से अपनी संस्कृति, सभ्यता, भाषा व परम्परा को जीवंत रखने के लिये और वैश्विक स्तर पर भारत को उच्च स्थिति में देखने के लिये भारतीय फिल्मों को महत्व देते हैं, क्योंकि भारतीय फिल्में देश की एक समृद्ध विरासत, संस्कृति व परम्परा को बखूबी प्रस्तुत करती हैं। यह हमारी भारतीय फिल्मों को संदर्भित करती हैं, जिसमें न केवल हिन्दी भाषा की फिल्में शामिल हैं बल्कि अन्य राज्यीय या क्षेत्रीय भाषा की फिल्में भी शामिल हैं। इस दृष्टि से भारतीय फिल्म उद्योग अनेक भाषायी फिल्मों का संयोजन हैं। **इरूम हॉफीज (२०१६) ने यह स्पष्ट किया हैं कि** – "भारत की कुल १४४ क्षेत्रीय भाषाओं मे ंसे लगभग ३० भाषाओं में फिल्मों का निर्माण किया जाता हैं, जिसमें हिन्दी के अलावा बंगाली, मराठी, मलयालम, तमिल, तेलगू जैसी भाषााओं की फिल्में शामिल हैं।"[५]

भारतीय फिल्म उद्योग के बारे में यह कहा जाता हैं कि इन फिल्मों ने स्वंतः ही अपना विकास किया हैं। चाहे वह बिना रंग वाली तथा मूक फिल्में हो या रंगीन वाली फिल्में, उक्त सभी में अपने आपको प्रगति के स्तर पर पहुँचाया हैं। यही ऐसे कारण रहे हैं, जिससे वैश्विक स्तर के फिल्म निर्माणकर्ता भारतीय फिल्मों को विशेष महत्व देते हैं। जिसका उत्तम उदाहरण आज अनेक विदेशी फिल्म निर्माण कंपनियॉ भारत में स्थित हैं और दिन-प्रतिदिन विकास के सोपानों को स्पर्श कर रही हैं। वर्ल्ड डिजनी, फॉक्स अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म निर्माण कंपंनी, सोनी पिक्चर्स, स्टार प्लस आदि ऐसी कंपंनियॉ हैं, जो आज भारत में विभिन्न प्रकार को फिल्मों के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

भारतीय फिल्म उद्योग – ऐतिहासिक परिपेक्ष्यः– जब हम भारतीय फिल्म उद्योग के ऐतिहासिक पक्ष पर दृष्टि डालते हैं, तो पता चलता हैं कि "वर्ष १८९६ से भारतीय फिल्म उद्योग की शुरूआत हो चुकी थी।"[६] जब फ्रॉस के दो भाईयो – "जिन्हें लुमियर ब्रदर्स के नाम से जाना जाता हैं, ने बुम्बई के वाटसन होटल में ६ लघु फिल्मों का प्रदर्शन किया था।"[७] यूरोप के फ्रॉस देश में जन्में लुमियर ब्रदर्स इस देश में स्थित बेसनकॉन नामक स्थान पर ३ फोटोग्राफिक स्टुडियो चलाने वाले दो व्यक्ति थे, जिनसे प्रेरित होकर **हरिशचन्द्र सखाराम भाखडेकर, ने १८०० में इंग्लैण्ड से एक कैमरा मंगवाया था।**[८] उन्होंने इस कैमरे के माध्यम से मुम्बई के एक हैंगिग गार्डन में एक छोटी सी क्लिपिंग की शूटिंग की थी। यह एक कुश्ती मैच की रिकॉर्डिंग थी, जिसे १८९९ में प्रदर्शित किया गया था। इसे भारतीय फिल्म उद्योग की पहली चलचित्र माना गया था। इसके बाद भारतीय फिल्म उद्योग में एक क्रॉति उत्पन्न हुयी और कई फिल्म निर्माताओं को फिल्म निर्माण हेतु प्रेरित किया था।

दादा साहेब फाल्के, जिन्हें आमतौर पर भारतीय फिल्म उद्योग का जन्म दाता तथा भारतीय भाषाओं एवं संस्कृत के महान विद्वान का खिताफ प्राप्त हुआ था, ने **वर्ष १९१३ में राजा हरिशचन्द्र नाम की एक फिल्म का निर्माण किया तथा फिल्म उद्योग की एक मजबूत नींव रखी थी।**[९] ये ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने भारतीय संस्कृत महाकाव्यों से फिल्म निर्माण हेतु सामग्री प्राप्त की और बहुत बड़े पैमाने पर महिलाओं को फिल्मों में काम देना आरंभ किया था। आपको बता दे कि दादा साहेब ने जो फिल्म (राजा हरिशचन्द्र) बनायी थी, वह एक मूक फिल्म थी तथा व्यापक स्तर पर एक व्यावसायिक फिल्म के नाम से सफल सिद्ध रही थी। उनकी इसी प्रसिद्धी के कारण दादा साहेब फाल्के एक निर्देशक, कैमरामैन, कलाकार, मेकअप, संपादक इत्यादि के नाम से जाने लगे थे और अपने दम पर उन्होंने कई फिल्मों का निर्माण किया था। ऑकड़े बताते हैं कि **वर्ष १९१३ से १९१८ तक कुल २३ फिल्मों का निर्माण किया था।**[७]

भारतीय फिल्म उद्योग के इतिहास में वर्ष १९२० वह वर्ष था, जिसने पूरे जोर-शोर के साथ फिल्म निर्माण का कार्य शुरू हो चुका था और प्रतिवर्ष २७ फिचर फिल्मों का निर्माण किया जाने लगा था, जो कि **"वर्ष १९३१ तक यह संख्या बढ़कर २०७ प्रतिवर्ष फिल्म हो गयी थी।"**[१०] यह वर्ष भारतीय फिल्म उद्योग के इतिहास में एक क्रॉतिकारी बदलाव सिद्ध हुआ था क्योंकि इस दशक में फिल्म निर्माण हेतु तकनीकी का प्रयोग किया जाना शुरू हो गया था। जिसके परिणामस्वरूप **वर्ष १९३१ में पहली बोलती फिल्म आलम-आरा, जिसका निर्देशन अर्देशिर इरानी द्वारा किया गया था, अस्तित्व में आयी और व्यापक स्तर पर हिट साबित हुयी थी।**[११] इसी दशक में अन्य क्षेत्रीय व राज्यीय भाषाओं की फिल्में में भी बोलती फिल्में जैसे - **"बंगाली भाषा में (जुमाई षष्ठी) तेलगू में (भक्त प्रहलाद), तमिल (कालिदास) आदि फिल्में रिलीज हुयी थी।"**[१२]

वर्ष १९४० से १९५० तक की अवधि के दौरान भारतीय फिल्म उद्योग के लिये अशॉती की अवधि साबित हुयी थी, क्योंकि इस अवधि में द्वितीय विश्व युद्ध से लेकर भारत-पाक विभाजन का मुद्दा सामने आया था, जिससे भारतीय फिल्में बहुत प्रभावित हुयी थी। ऐसी संकटकालीन स्थिति में फिल्म निर्माताओं ने अपनी फिल्में में सामाजिक-राजनैतिक मुद्दों को शामिल करते हुये एक प्रकार से भारतीय मसाला फिल्में तैयार की थी और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जो फिल्म (कठबोली) आयी थी। इसी प्रकार की थी, हालॉकि यह अवधि फिल्मों के लिये अशॉती रही थी, परन्तु फिर भी इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता हैं कि भारतीय स्वतंत्रता अर्थात १९४७ के बाद भारतीय फिल्म उद्योग में एक उल्लेखनीय परिवर्तन व प्रगति का दौर देखा गया था। इस अवधि में **सत्यजीत रॉय तथा विमल रॉय जैसे निर्माता-निर्देशकों ने ऐसी फिल्मों का निर्माण किया था, जो मानव दुखों पर केन्द्रित थी, जैसे-दहेज, वैश्यावृत्ति आदि।**[१३] इसी प्रकार सन १९५३ में रिलीज हुयी सत्यजीत रे की **क्लासिकल फिल्म पाथेर पॉचाली वैश्विक परिदृश्य में भारतीय फिल्म उद्योग के लिये एक बड़ी सफलता साबित हुयी थी और सर्वश्रेष्ट फिल्म श्रेणी में कॉस्य पुरूस्कार भी प्राप्त किया था।**[१४] यह अवधि संगीत युग के नाम से भी ख्याति प्राप्त हैं क्योंकि लता मंगेशकर, आशा भोसलें, किशोर कुमार तथा मोहम्मद रफी जैसे गायकों ने अपना दबदबा कायम रखा था।

भारतीय फिल्म उद्योग के इतिहास में १९५० व १९६० के दशक की अवधि को भारतीय फिल्मों के संदर्भ में स्वर्णयुग के नाम से जाना जाता था क्योंकि इस अवधि में राजकपूर, गुरूदत्त, दिलीप कुमार, मीना कुमारी, नरगिस, देव आनंद, मधुबाला, व्हीक्ष रहमान जैसे अभिनेता तथा अभिनेत्रियॉ अपनी बेहत्तरीन अदाकारी के नाम से उभरकर आयी थी, जबकि फिल्म निर्माताओं व निर्देशकों में ऋत्विक घटक, मृणाल सेन, अरविंदन एवं ऋतुपर्णा घोष जैसी महान हस्तियों ने विश्व स्तर पर भारतीय फिल्मों का निर्माण करके हिन्दी समान्तर सिनेमा का दर्जा प्रदान करने में अपनी अहम भूमिका निभायी थी। यही कारण हैं कि इस अवधि की अधिकॉश फिल्में जैसेः- **बिमल रॉय की दो बीघा जमीन, राजकूपर की श्री४२० (१९५५) व आवारा (१९५१), महबूब खान की मदर इंडिया (१९५७), गुरूदत्त की प्यासा (१९५७) और कागज के फूल (१९५९) बॉक्स ऑफिस पर ब्लॉक बस्टर साबित हुयी थी तथा कई रिकॉर्ड भी बनाये थे।**[१५]

वर्ष १९६० से १९७० तक की अवधि में भारतीय फिल्मों की कहानियों में एक मोड़ आया और कला फिल्मों के साथ-साथ बड़े बजट की पारिवारिक कहानियों से हटकर अन्य विवादास्पदा मुद्दों पर फिल्में बनना आरंभ हुयी। इस अवधि की कमाल अवरोही की पाकिजा, राजकपूर की बॉबी, कभी-कभी, अमर अकबर एंथनी, हम किसी से कम नहीं और रमेश सिप्पी की शोले आदि थी, जिनहें भारतीय फिल्म उद्योग के इतिहास में सदाबहार फिल्मों के नाम से जाना जाता हैं। इस अवधि में अधिकॉश ऐसी फिल्मों का निर्माण किया जाता था, जो मसाला से भरपूर होती थी अर्थात पारिवारिक, प्रेम कहानी, हास्यप्रद, दुखों से परिपूर्ण, डकैत

समस्या, गैंग्स्टर आदि से भरपूर होती थी, जिसमें राजेश खन्ना, धर्मेन्द्र, मुमताज, शर्मिला टेगोर, हेलन जैसे फिल्मी सितारे शामिल थे। इन अवधियों में भारतीय सिनेमा की जो समान्तर हिन्दी सिनेमा का खिताब मिला था, उसका श्रेय गोविंद निहलानी तथा विजय मेहता को जाता हैं।

सन १९८० से १९९० के दशक में एक बार फिर भारतीय सिनेमा में परिवर्तन आया और मधुर संगीत पर आधारित फिल्मों का निर्माण शुरू हुआ। यह संगीत पारिवारिक फिल्मों के आधार पर संचालित था, जिसमें मैने प्यार किया (१९८९), तेजाब, मि. इंडिया, कयामत से कयामत तक (१९८८), दिलवाले दुल्हनियॉ ले जायेंगे (१९९५), चॉदनी, जो जीता वहीं सिंकदर, हम हैं राही प्यार के, क्रॉतिवार, बाजीगर आदि फिल्में शामिल थी, जो इन दशकों में ब्लॉकबस्टर साबित हुयी थी।

सन १९८० व १९९० में भारतीय सिनेमा के अन्तर्ग कुछ नये सितारे जैसेः- सलमान खान, शाहरूख खान, अमीर खान, जूही चाबला, श्रीदेवी, माधुरी दीक्षित अदि उभरकर आये थे और एक्शन, कॉमेडी से परिपूर्ण फिल्में बनायी जाती थी, परन्तु इन दशकों में एक आश्चर्य जनक घटना हुयी थी और वह थी **सलाम बाम्बे (१९८८) नामक फिल्म, ये हिन्दी फिचर फिल्म बॉलीवुड की प्रसिद्ध निर्माता निर्देशक मीरा नायर द्वारा बनायी गयी थी और उस दौर की क्लासिकल फिल्मों की श्रेणी में शामिल थी, यह फिल्म जबरदस्त हिट हुयी तथा १९८८ के फिल्म कान्न समारोह में बेस्ट कैमरा अवार्ड से सम्मानित की गयी थी।**[१५] यह दशक विशेष रूप से अद्वितीय कलाकारों तथा स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं के लिये जाना जाता हैं, जिन्होंने बहुत बड़े पैमाने पर फिल्मों के माध्यम से व्यावसायिक सफलता हासिल की थी।

आज अर्थात २०वी शताब्दी में भारतीय फिल्म उद्योग उच्च तकनीक तथा यंत्रों के प्रयोग के माध्यम से काफी फल-फूल रहा हैं और कम्प्यूटर तकनीक तथा सूचना, संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से बेस्ट से बेस्ट फिल्मों को दर्शकों के पास पहुॅचाकर प्रगति के उच्च स्तर पर ले जा रहा हैं।

वैश्वीकरण के कारण लगातार बढ़ते विदेशी फिल्म उद्योग एवं वैश्विक बाजार के कारण आज भारतीय फिल्म उद्योग इनसे प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम हुआ हैं। यही कारण हैं कि २०वीं सदी में भारतीय सिनेमा उद्योग उच्च तकनीक (कम्प्यूटर) के माध्यम से एक्शन से भरपूर फिल्में जैसेः- कोई मिल गया (२००३), बाहुबली, जिसमें उच्च स्तर की कम्प्यूटर तकनीक का प्रयोग किया गया हैं, आदि फिल्में भारतीय दर्शकों के सामने परोसने में सक्षम हुआ हैं।

२०वीं सदी की कुछ सफल फिल्में जैसेः- रंग दे बसंती (२००६), लगे रहो मुन्ना भाई (२००६), कृष, धूम-२ (२००६), चक दे इंडिया (२००७), ३ इडियटस (२००९), राजनीति व दबंग (२०१०) आदि हैं। जिसमें रणवीर कपूर, ऋतिक रोशन, आमिर खान, अभिषेक बच्चन, शाहरूख खान, सलमान खान, रानी मुखर्जी, प्रीति जिंटा, ऐश्वर्या राय, करीना कपूर, प्रियंका चौपड़ा, कैटरीना आदि अभिनेताओं तथा अभिनेत्रियों ने अपनी बेहत्तर अदाकारी के माध्यम से भारतीय फिल्म उद्योग को सफलता के शीर्ष पर पहुॅचाया हैं।

२०वीं सदी के कुछ निर्माता निर्देशकों जैसे अनुराग कश्यप, ने यह साबित कर दिया कि यदि फिल्म पूरी मेहनत व लगन से बनायी जाये तो गैंग्स ऑफ बासेपुर, जो कि एक यर्थाथवादी परिदृश्य पर आधारित हैं, जैसी फिल्में भी व्यावसायिक सफलता प्राप्त करने में सक्षम हो सकती हैं। बस, शर्त हैं कि एक व्यवस्थित कहानी बेहत्तर निर्देशन, कम्प्यूटर तकनीक का व्यवस्थित प्रयोग, उच्च स्तर का छायॉकन व पटकथा और फिल्म में कार्य करने वाले कलाकार (नायक/नायिकायें) बेहत्तर अदाकारा हो, तो किसी भी फिल्म को व्यावसायिक सफलता दिलायी जा सकत हैं।

आज जो भारतीय सिनेमा जिस मुकाम पर हैं, उसे उस स्तर पर पहुॅचाने में न केवल फिल्म निर्माता-निर्देशको, नायक/नायिकाओं का सहयोग रहा हैं, बल्कि भारतीय दर्शकों का भी सराहनीय योगदान रहा हैं, जिन्होंने फिल्मों को देखकर व्यावसायिक सफलता दिलाई हैं, लेकिन इसमें केवल भारतीय दर्शक ही शामिल नहीं हैं बल्कि विदेशों में

निवासरत अर्थात प्रवासी भारतीयों का भी अहम योगदान रहा हैं, जिन्होंने विदेशों (अमेरिका, ऑस्ट्रेलियॉ, कनाडा, ब्रिटेन) जैसे देशों में हिन्दी फिल्मों को पसंद किया हैं तथा सफलता के उच्च स्तर पर पहुँचाया हैं। संक्षेप में यह कहा जा सकता हैं कि **"भारतीय फिल्म उद्योग अपनी प्राचीन पारम्परिक पारिवारिक कहानियों, पौराणिक तथा धार्मिक पृष्ठभूमि, बेहत्तर निर्माता-निर्देशक, नायक/नायिकाओं द्वारा उच्च स्तर का अभिनय, घरेलू तथा वैश्विक स्तर के दर्शकों से परिपूर्ण बाजार इत्यादि के मामलें में हमेशा समृद्ध रहा हैं और रहेगा।" डॉ. राजेश मौर्य, जे.पी. मित्तल**

निष्कर्षः- उपरोक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता हैं कि वास्तव में भारतीय फिल्म उद्योग का इतिहास सतत परिश्रम, कठिन संघर्ष और चुनौतियों से भरा हुआ रहा हैं। जिनका सामना हमारे निर्माता-निर्देशकों से लेकर नायक/नायिकाओं, लेखक, पटकथा, छायॉकन, कैमरामैन, संगीतकार व गायकों ने डटकर किया और भारतीय सिनेमा उद्योग को ऊँचाईयों की बुलंदियों पर पहुँचाया हैं, आज भारतीय सिनेमा जो प्रगति के स्तर पर पहुँचा हैं, वह इन सब लोगों के कठिन परिश्रम व संघर्ष का ही परिणाम हैं, हालॉकि यह सत्य हैं कि भारत में फिल्मों का निर्माण व्यापक स्तर पर किया जाता हैं अर्थात हॉलीवुड से भी अधिक फिल्में बनायी जाती हैं, लेकिन गुणवत्ता या हॉलीवुड जैसी फिल्में की दृष्टि से अत्यंत निम्न स्तर पर आती हैं परन्तु आने वाले समय में इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता हैं कि भारतीय फिल्में भी गुणवत्ता की दृष्टि से वैश्विक स्तर पर अपनी छाप छोड़ेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Bollywood. (www.britannica.com)
2. Bollywood Dictionary Definition. (www.vacabulary.com)
3. विकीपीड़िया, विष्व का एकमात्र विष्व ज्ञानकोश भंडार
4. Ramanathan Sharda International Forum on the creative economy, Bollywood behind the scenos, 1 29, 2008.
5. Dr. Erum Hafeez and Dr. Asmat Ara (December 2016) History and Evolution of Indian Film Industry. https://www.researchgate.net/publication332751636.
6. Ibid
7. Shreya Suresh (21 December 2018), History of Indian Cinema (www.indianfolk.com), 21 December 2018.
8. Ibid
9. https://www.academia.edu/36534884/ DADA SAHEB PHALKE A cinematic Soundscap E Retrieved on December 20, 2011
10. Ibid, Encyclopedia of Indian Cinema, 1991, p. 104.
11. Dheeraj Kumar (26 January 2019) Evolution of Indian Cinema (www.timesofindia.indiatimes.com), 26 January 2019.
12. Indian Cinema – Origin growth and major trends. By Shodhganga, chapter 2, p. 20. Shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstroam/10603/97432/3/th-1824.ch2.pdf (n.d)
13. Sanchita Paul (9 April 2015) – History of Indian Cinema (www.mapsofindia.com), 9 April 2015.
14. Maker of Innovative meaningful movies. "The Hindu" www.hinduonline.com, 15 June 2007.
15. A Chatterji, Shoma. "Where East meets West" The Tribune, 30 June 2007.

डॉ. राजेश मौर्य प्रो. जे. पी. मित्तल